

डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 7, नई नास्तिकता

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए अपने व्याख्यान हैं। यह सत्र 7 है, नया नास्तिकवाद।

ठीक है, अब जब हमने ईश्वर के अस्तित्व के लिए कई तर्कों और ईश्वर में विश्वास करने के कारणों पर विचार कर लिया है, तो आइए विपरीत दृष्टिकोण, नास्तिकता और एक आंदोलन पर नज़र डालें, जिसका कुछ साल पहले काफी सांस्कृतिक प्रभाव था, जिसे नया नास्तिकवाद कहा जाता है।

द न्यू एथिस्ट के कुछ तर्कों पर नज़र डालें, और मैं नास्तिकता का एक ऐसा विश्लेषण प्रस्तुत करने जा रहा हूँ जो मुझे लगता है कि बाइबिल का विश्लेषण है और जो कुछ ऐसे विचार प्रदान करता है जो मुझे लगता है कि ईसाइयों को नास्तिकता की इस घटना पर विचार करते समय ध्यान में रखना चाहिए। तो, यह तथाकथित नया नास्तिकवाद क्या है? यह एक आंदोलन है जो मूल रूप से 2004 में सैम हैरिस की पुस्तक, द एंड ऑफ़ फ़ेथ के प्रकाशन के साथ शुरू हुआ, और फिर, काफी तेज़ी से, रिचर्ड डॉकिंस, क्रिस्टोफ़र हिचेन्स और डैनियल डेनेट जैसे लोगों द्वारा कई अन्य पुस्तकें प्रकाशित की गईं। वास्तव में, वे चार विद्वान, डॉकिंस, हैरिस, हिचेन्स और डेनेट, कुछ क्षेत्रों में नास्तिक या नए नास्तिक सर्वनाश के चार घुड़सवारों के रूप में जाने गए।

यहाँ नए नास्तिकों की कुछ बयानबाजी का नमूना दिया गया है, जिसमें रिचर्ड डॉकिंस भी शामिल हैं, जो ऑक्सफ़ोर्ड में लंबे समय से जीवविज्ञानी हैं। उनका कहना है कि ओल्ड टेस्टामेंट का ईश्वर यकीनन सभी काल्पनिक कहानियों में सबसे अप्रिय चरित्र है, ईर्ष्यालु और गर्वित, एक तुच्छ, अन्यायी, क्षमा न करने वाला नियंत्रण सनकी, प्रतिशोधी, खूनी जातीय सफ़ाईकर्मी, स्त्री-द्वेषी, समलैंगिकता-द्वेषी, नस्लवादी, शिशु-हत्यारा, नरसंहारक, संतान-हत्यारा, महामारी-उत्साही, महापापी, परपीड़क, मनमौजी रूप से दुष्ट बदमाश। तो यह ईश्वर और ईश्वर के भ्रम का उनका वर्णन है।

सैम हैरिस, जो उस तस्वीर में बेन स्टिलर से कुछ हद तक मिलते-जुलते हैं। उनका कहना है कि किसी प्रस्ताव की सच्चाई पर विचार करते समय, या तो कोई व्यक्ति साक्ष्य और तार्किक तर्कों का ईमानदारी से मूल्यांकन करता है या नहीं। धर्म हमारे जीवन का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ लोग कल्पना करते हैं कि बौद्धिक अखंडता का कोई अन्य मानक लागू होता है।

यह उनके लेटर टू ए क्रिश्चियन नेशन से है, जो एक आकर्षक पुस्तक है क्योंकि यह पूरी तरह से दूसरे व्यक्ति में लिखी गई है। हैरिस यह भी कहते हैं कि 11 सितंबर के अत्याचारों को अंजाम देने वाले लोग निश्चित रूप से कायर नहीं थे जैसा कि उन्हें पश्चिमी मीडिया में बार-बार वर्णित किया गया था, न ही वे किसी भी सामान्य अर्थ में पागल थे। वे आस्थावान व्यक्ति थे, पूर्ण आस्थावान, जैसा कि पता चलता है, और यह, अंततः स्वीकार किया जाना चाहिए, एक भयानक बात है।

क्रिस्टोफर हिचेन्स कहते हैं, मुझे लगता है कि धर्म से हमेशा से मेरी नफ़रत की एक वजह यह है कि यह इस विचार को थोपने की धूर्त प्रवृत्ति है कि ब्रह्मांड को आपके दिमाग में रखकर बनाया गया है, या इससे भी बदतर, कि एक दिव्य योजना है जिसमें कोई भी व्यक्ति फिट बैठता है, चाहे उसे पता हो या नहीं। इस तरह की विनम्रता मेरे लिए बहुत अहंकारी है। इसलिए अनादि काल से नास्तिक रहे हैं; जहाँ तक हम ऐतिहासिक रूप से खोज सकते हैं, हमेशा धार्मिक संशयवादी, अज्ञेयवादी और नास्तिक रहे हैं।

जिसे हम नया नास्तिकवाद कह रहे हैं, हिचेन्स और हैरिस और डॉकिंस और डेनेट जैसे लोगों से मिलने वाली नास्तिकता की शैली में क्या खास है? नए नास्तिक पुराने पारंपरिक नास्तिकों, आपकी दादी के नास्तिकों से किस तरह अलग हैं? मुझे लगता है कि एक बात सिर्फ़ नज़रिए में अंतर है। डेविड ह्यूम, जॉन डेवी या बर्ट्रैंड रसेल की रचनाओं की तुलना में यह बहुत ज़्यादा बेशर्म और आक्रामक दृष्टिकोण है। शायद वे फ्रेडरिक नीत्शे की तरह हैं, जो आस्तिकता की निंदा करने में बहुत आक्रामक और कठोर थे।

और नए नास्तिकों में एक निश्चित, कम से कम कथित, वैज्ञानिक जोर है जो आपको मिलता है। वे धार्मिक विश्वास के लिए वैज्ञानिक औचित्य पर जोर देते हैं। नए नास्तिकों के अनुसार, ऐसा न करने पर, आप ईश्वर में विश्वास करने में गैर-जिम्मेदार हैं।

इसलिए, जब आप उनकी प्राथमिक आपत्तियों को ध्यान से पढ़ेंगे, तो आपको दो मुख्य आपत्तियाँ नज़र आएंगी जो उनके कामों में प्रबल दिखाई देती हैं। एक है बुराई की पुरानी समस्या। एक सर्वशक्तिमान, पूर्णतः अच्छा ईश्वर बुराई की अनुमति कैसे दे सकता है? हम इस पर एक अलग व्याख्यान में चर्चा करेंगे।

धार्मिक विश्वास की जांच में यह मुख्य चिंता का विषय है, और यह आस्तिक के लिए एक समस्या है। हम इसे निश्चित रूप से स्वीकार कर सकते हैं। हालाँकि, नए नास्तिक लगातार यह मानते हैं कि इस समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता है।

इसका उत्तर पर्याप्त रूप से नहीं दिया जा सकता। इसलिए, यह उनके नास्तिक होने का एक मुख्य कारण होगा। दूसरा कारण विज्ञान की ओर से यह आपत्ति है कि ईश्वर में विश्वास, और विशेष रूप से मसीह के कुंवारी जन्म, यीशु के पुनरुत्थान, बाइबिल की दिव्य प्रेरणा और धर्मग्रंथों में विभिन्न चमत्कार जैसे सिद्धांत, इन चीजों को वैज्ञानिक रूप से सत्यापित या समझाया नहीं जा सकता है।

वे विज्ञान विरोधी हैं। और इसलिए, यदि आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जो पूरी तरह से तर्कसंगत हैं, तो आपको उन सभी सिद्धांतों, उन सभी विश्वासों को अस्वीकार कर देना चाहिए। यह नए नास्तिकों में भी एक सुसंगत विषय है।

हम वैज्ञानिक आपत्तियों का जवाब कैसे देते हैं? हम इस बारे में एक अलग व्याख्यान में और विस्तार से बात करेंगे, लेकिन मैं अभी यह नोट कर सकता हूँ कि इस बात पर जोर देना कि किसी की सभी मान्यताएँ वैज्ञानिक रूप से आधारित हों या अनुभवजन्य जाँच के माध्यम से पुष्टि के

अधीन हों, जिसे कभी-कभी वैज्ञानिकता या प्रत्यक्षवाद कहा जाता है। प्रत्यक्षवाद या वैज्ञानिकता के साथ समस्या यह है कि यह आत्म-खंडन है। यह मांग कि सभी सत्य वैज्ञानिक रूप से सिद्ध किए जा सकें, कुछ ऐसा है जिसे स्वयं वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

तो, यह आत्म-खंडन है। यह उस शाखा को काट देता है जिस पर यह बैठा है। यह खुद को कमज़ोर करता है, चाहे आप इसे जिस भी तरह से कहें।

यह निश्चित रूप से ऐसा दावा या दृष्टिकोण नहीं है जिसे लगातार बनाए रखा जा सके। दूसरे, वैज्ञानिकता या प्रत्यक्षवाद नैतिक सत्य, सुंदरता के बारे में ज्ञान या यहाँ तक कि जीवन के अर्थ जैसी चीज़ों के ज्ञान की संभावना को खारिज करता है। आप विज्ञान से इनमें से कुछ भी नहीं पा सकते।

विज्ञान जांच का एक अनुभवजन्य साधन है, और यह हमें दुनिया का सटीक, बहुत उपयोगी, तथ्यात्मक विवरण देता है, लेकिन यह जीवन में मूल्यों, सुंदरता और अंतिम अर्थ के प्रति पूरी तरह से अंधा है। इसलिए जो कोई भी वैज्ञानिकता पर जोर देता है, उसे उन सभी चीज़ों के बारे में अपनी सभी मान्यताओं को त्यागना होगा, जो थोड़ा डरावना है क्योंकि ऐसे व्यक्ति को पूरी तरह से नैतिक संदेहवादी होना होगा और कहना होगा कि हमारे पास कोई नैतिक ज्ञान नहीं है और ऐसे व्यक्ति के आसपास रहना थोड़ा डरावना होगा, वास्तव में। आमतौर पर, ठीक है, शायद हमेशा, कम से कम हर बार जब मैंने किसी नए नास्तिक को इस प्रश्न से निपटते देखा है, तो वे जोर देते हैं कि, अरे नहीं, हम जानते हैं कि नैतिक सत्य हैं।

हम जानते हैं कि कुछ चीज़ें सही हैं, कुछ चीज़ें गलत हैं, और न्याय, दूसरों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार और लोगों के प्रति सम्मान अच्छी चीज़ें हैं। इसलिए, वे इन नैतिक मूल्यों की पुष्टि करते हैं और संभवतः उसी के अनुसार जीने का प्रयास करते हैं, लेकिन मुद्दा यह है कि यदि वे वास्तव में वैज्ञानिकता या प्रत्यक्षवाद के भक्त हैं, तो वे नैतिक सत्य और मूल्यों की लगातार पुष्टि नहीं कर सकते। यह कुछ ऐसा है जिसके लिए उस दृष्टिकोण में कोई जगह नहीं है।

विज्ञान स्वयं कुछ अप्रमाणित आस्था के लेखों पर आधारित है, और यहाँ यह भी एक महत्वपूर्ण अवलोकन है कि विज्ञान पर जितना भी जोर दिया जा सकता है और सभी प्रकार के मुद्दों के बारे में वैज्ञानिक रूप से कठोर होने की आवश्यकता है, विज्ञान स्वयं आस्था प्रतिबद्धताओं पर आधारित है जैसे कि हमारा विश्वास कि हमारी इंद्रियाँ आम तौर पर विश्वसनीय हैं, कि प्रभावों के कारण होते हैं, कि प्रकृति एक समान है, कि विचार वास्तविकता को दर्शाता है। ये सभी ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता है। उन्हें शुरू से ही मान लेना चाहिए।

तो फिर, अगर कोई व्यक्ति प्रत्यक्षवादी है या वैज्ञानिकता की पुष्टि करता है, तो वहाँ एक और असंगति है क्योंकि विज्ञान इनमें से किसी भी चीज़ को साबित नहीं कर सकता है, लेकिन उन्हें विश्वास के बुनियादी दार्शनिक लेखों के रूप में मानना चाहिए। यहाँ एक और बात है जिसे हम नए नास्तिकता के जवाब में देख सकते हैं कि वास्तव में ईश्वर के लिए बहुत सारे सबूत हैं, और इसका बहुत कुछ विज्ञान के साथ-साथ नैतिकता या नैतिकता और सही और गलत के बारे में सामान्य ज्ञान के विश्वासों के साथ-साथ व्यक्तिगत अनुभव से भी आता है। सीएस लुईस से लेकर

ली स्ट्रोबेल तक कई प्रमुख ईसाई धर्मोपदेशक, जो कभी नास्तिक थे, विश्वास और ईश्वर के अस्तित्व के सबूतों की खोजबीन के माध्यम से बड़े पैमाने पर परिवर्तित हुए।

इसका एक हालिया नाटकीय उदाहरण एंथनी फ्लू है, जो 50 वर्षों के बेहतर हिस्से के लिए एक प्रमुख नास्तिक बुद्धिजीवी थे। 50 और 60 के दशक की शुरुआत में, उन्होंने कई विद्वत्तापूर्ण कार्य किए, जिनका धर्म के दर्शन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा, जिससे आस्तिकों, ईसाइयों और अन्य आस्तिकों को रक्षात्मक स्थिति में डाल दिया गया और उन्हें सबूत देने का भार दिया गया। उन्होंने जोर देकर कहा कि हमें नास्तिकता की धारणा से शुरुआत करनी चाहिए, और ईश्वर के अस्तित्व को साबित करना आस्तिक की जिम्मेदारी है।

अन्यथा, आस्तिक के पास ईश्वर में विश्वास करने का कोई तर्कसंगत अधिकार या ज्ञानात्मक अधिकार नहीं है। उनका कर्तव्य यह प्रदर्शित करना और साबित करना है कि ईश्वर मौजूद है, और तभी और केवल तभी वे अपने ज्ञानात्मक दायित्वों को पूरा कर पाएंगे और धार्मिक आस्तिक बन पाएंगे। इसलिए फ्लू ने अकादमी में, विशेष रूप से दार्शनिक संघ में, नास्तिकता की इस धारणा के साथ उस माहौल को बनाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

लेकिन 2004 या 5 के आसपास कुछ हुआ। वह एक तरह से आस्तिक बन गया, एक रूढ़िवादी ईसाई नहीं, लेकिन निश्चित रूप से ऐसा व्यक्ति जो मानता था कि ब्रह्मांड को किसी अलौकिक प्राणी द्वारा बनाया गया है। जब इस बारे में खबर आई, मुझे लगता है कि यह 2005 के आसपास था, और यह एक अंतरराष्ट्रीय कहानी थी। और बाद में उन्होंने एक किताब लिखी जिसका नाम था देयर इज़ ए गॉड।

वहाँ, वह उन विचारों का वर्णन करता है, जिन्होंने उसे एक तरह के आस्तिक दृष्टिकोण में परिवर्तित होने के लिए प्रेरित किया। एक व्यक्ति बस अधिक गहराई से और ब्रह्मांड विज्ञान, ब्रह्मांड के अस्तित्व और ब्रह्मांड के लिए एक कारण स्पष्टीकरण की आवश्यकता से संबंधित उभरते सबूतों के प्रकाश में सोच रहा है। और ब्रह्मांडीय बारीक-ट्यूनिंग, जिसके बारे में हमने दशकों से बात की है, क्योंकि ब्रह्मांड में जीवन की संभावना के लिए प्रकृति के विभिन्न नियमों को कितनी बारीकी से समायोजित किया गया है, इस संबंध में अधिक से अधिक जानकारी एकत्र की गई है।

यह जीवन की संभावना के लिए प्रकृति के इन सभी अलग-अलग नियमों के बीच एक अद्भुत अभिसरण है। ऐसा लगता है कि ब्रह्मांड को इसी संभावना के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसका फ्लू पर भी प्रभाव पड़ा।

और फिर जीवन का उद्भव, हम निर्जीव जड़ पदार्थ से जीवन की उत्पत्ति को कैसे समझा सकते हैं? यह हमेशा से नास्तिकों के लिए एक चुनौती रही है। लेकिन फ्लू के लिए, प्रकृतिवादी के दृष्टिकोण से यह कितना समस्याग्रस्त है, इस बारे में अधिक से अधिक जांच का भी बड़ा प्रभाव पड़ा। इसलिए, वह अंततः एक तरह के आस्तिकवाद में परिवर्तित हो गया।

जब उन्होंने अपनी पुस्तक, देयर इज़ ए गॉड लिखी, तो उन्हें ईसाई धर्म के बारे में एक तरह का परिशिष्ट लिखने के लिए किसने कहा था? यह एनटी राइट थे, जो महान न्यू टेस्टामेंट विद्वान थे, जिन्होंने एनटी राइट के लिए फ्लू के सम्मान की गहराई और महत्वपूर्ण संभावना को प्रतिबिंबित किया, यदि संभावना नहीं है, कि यदि ईश्वर से कथित विशेष रहस्योद्घाटन के इतिहास के साथ धार्मिक परंपरा के संदर्भ में आस्तिकता का कोई विशेष ब्रांड, यदि उनमें से एक सच है, तो यह सबसे अधिक संभावना ईसाई धर्म है। और फ्लू ने कहा कि नासरत के यीशु के करिश्मे, उनके प्रवचनों की प्रकृति, साथ ही प्रेरित पॉल की विद्वत्तापूर्ण प्रतिभा के कारण, उन दोनों चीजों ने इसे ऐसा बना दिया कि उनके दिमाग में, फ्लू के दिमाग में, यदि इन आस्तिक परंपराओं में से एक सच है, तो यह सबसे अधिक संभावना ईसाई धर्म है। मुझे नहीं पता कि वह कभी पूर्ण ईसाई विश्वास पर पहुंचे या नहीं, लेकिन निश्चित रूप से ऐसे संकेत थे कि वह इस विचार से सहानुभूति रखते थे कि ईसाई धर्म प्रमुख धार्मिक परंपराओं के संदर्भ में आस्तिकता का सच्चा या सबसे सच्चा रूप हो सकता है।

तो, हमने ईश्वर के लिए प्रमाण और विभिन्न आस्तिक तर्कों के बारे में बात की है। यदि आस्तिकता के पास वास्तव में मजबूत साक्ष्य समर्थन है और नास्तिकता मूल रूप से तर्कहीन है, तो लोग सबूतों के कारण नास्तिक नहीं बनते। तो, सवाल यह है कि नास्तिकता का कारण क्या है? जब नया नास्तिक आंदोलन वास्तव में आगे बढ़ रहा था, तो मुझे उम्मीद थी कि कोई ऐसी किताब लिखेगा जो नास्तिकता के लिए बाइबिल की व्याख्या को स्पष्ट करेगी।

और यह सिर्फ सबूतों की समस्या नहीं है, बल्कि जो भी किताबें आईं, उनमें ईश्वर के सबूतों पर ही बात की गई और नास्तिकता के प्राथमिक, शायद प्राथमिक, बाइबिल विश्लेषण को संबोधित नहीं किया गया। इसलिए, मैंने सोचा, ठीक है, किसी को तो किताब लिखनी ही होगी। कोई और नहीं कर रहा है, इसलिए मैं लिखूंगा। मेरी किताब, *द मेकिंग ऑफ़ एन एथिस्ट*, 2010 में प्रकाशित हुई थी।

और यहाँ कुछ मुख्य विचारों का सारांश दिया गया है जो मैंने उस पुस्तक में विकसित किए हैं। मैं बस नास्तिकता के बारे में बाइबिल की व्याख्या या विवरण की तलाश कर रहा हूँ। और यहाँ कुछ प्रमुख बाइबिल ग्रंथ हैं जो हमें बताते हैं कि जब लोग कम से कम कट्टर नास्तिक बन जाते हैं तो क्या होता है।

हम उन लोगों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं जिन्हें सिर्फ संदेह है या जो अज्ञेयवादी हैं या जो अनिर्णीत हैं, बल्कि उन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो आश्वस्त हैं और यहां तक कि डेनेट, डॉकिन्स, हैरिस और हिचेन्स जैसे कट्टर नास्तिक भी हैं। इसलिए, रोमियों 1 इस मुद्दे को बहुत ही सीधे तरीके से संबोधित करता है। प्रेरित पौलुस के लेखन में कहा गया है कि परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से उन सभी लोगों की अधर्मिता और दुष्टता के विरुद्ध प्रकट हो रहा है जो अपनी दुष्टता से सत्य को दबाते हैं क्योंकि परमेश्वर के बारे में जो कुछ भी जाना जा सकता है वह उनके लिए स्पष्ट है क्योंकि परमेश्वर ने इसे उनके लिए स्पष्ट कर दिया है। क्योंकि दुनिया के निर्माण के समय से, परमेश्वर के अदृश्य गुण, उसकी सनातन शक्ति और ईश्वरीय स्वभाव स्पष्ट रूप से देखे गए हैं, जो कि बनाए गए हैं ताकि लोगों के पास कोई बहाना न हो।

इसलिए पौलुस हमें वहाँ बता रहा है कि परमेश्वर ने खुद को सृष्टि में स्पष्ट रूप से जाना है। आपके पास आस्तिक न होने का कोई बहाना नहीं है।

और यह एक तरह से बुराई या जिसे वह दुष्टता कह रहा है, द्वारा सत्य को कठोर बनाना या दबाना है जो कुछ लोगों को परमेश्वर की वास्तविकता को स्वीकार करने से रोकता है। इफिसियों 4 में, वह कहता है, मैं तुमसे यह कहता हूँ और प्रभु में इस पर जोर देता हूँ कि तुम अब से अन्यजातियों की तरह अपनी सोच की व्यर्थता में मत जियो। वे अपनी समझ में अंधकारमय हो गए हैं और अपने हृदय की कठोरता के कारण उनमें जो अज्ञानता है उसके कारण परमेश्वर के जीवन से अलग हो गए हैं।

फिर से, आपके पास ईश्वर के बारे में अज्ञानता का यह विषय है जो सबूतों की कमी के कारण नहीं बल्कि दिल के कठोर होने के कारण है। ईश्वर की सच्चाई के प्रति इच्छा का एक निश्चित प्रतिरोध है। और फिर यूहन्ना 3 में, और यह यीशु की बात है, वह कहता है, यह निर्णय है : प्रकाश दुनिया में आया है, लेकिन लोगों ने प्रकाश के बजाय अंधकार को पसंद किया क्योंकि उनके कर्म बुरे थे।

जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से घृणा करता है और इस डर से ज्योति में नहीं आता कि उसके काम उजागर हो जाएँगे। लेकिन जो कोई सत्य के द्वारा जीवन जीता है, वह ज्योति में आता है ताकि यह स्पष्ट रूप से देखा जा सके कि उसने जो कुछ किया है, वह परमेश्वर की दृष्टि में किया है। इसलिए फिर से, सत्य के प्रति प्रतिरोध के विषय में, यीशु ने व्यक्ति के विशेष स्वभाव के कारण प्रकाश के इस रूपक का उपयोग किया।

यह एक जानबूझकर किया गया प्रतिरोध और अस्वीकृति है। यह सबूतों की कमी या सबूतों की अस्पष्टता के कारण नहीं है। इसलिए, इसका नतीजा यह है कि जब ईश्वर की वास्तविकता की बात आती है, तो अविश्वास अवज्ञा का परिणाम है।

अपनी पुस्तक के एक अध्याय में, मैं एल्विन प्लांटिंगा के रिफॉर्मड एपिस्टेमोलॉजी के काम पर बहुत अधिक निर्भर हूँ, जिसके बारे में हम अलग से बात करेंगे। उनकी महान त्रयी के तीसरे खंड में वारंट पर एक अध्याय है, जिसका नाम है। तीसरे खंड का नाम है वारंटेड क्रिश्चियन बिलीफ। पाप के संज्ञानात्मक परिणामों पर उनका एक अध्याय है।

मानव संज्ञान को एक निश्चित तरीके से कार्य करने के लिए डिज़ाइन किया गया था, ठीक वैसे ही जैसे हमारे विभिन्न अंग प्रणालियाँ। और जब ऐसे प्रतिकूल कारक होते हैं जो हमारे संज्ञान के उचित कार्य को प्रभावित करते हैं, तो हम सच्चे विश्वासों के निर्माण के मामले में कम विश्वसनीय होते हैं। और इसलिए, प्लांटिंगा ने नोट किया कि संज्ञानात्मक कार्य को प्रभावित करने वाली चीजों में से एक, जैसे कि मन को बदलने वाली दवाएँ या बड़ी मात्रा में शराब या शारीरिक मस्तिष्क क्षति या खराब दर्शन, सभी प्रकार के मुद्दों पर संज्ञानात्मक कार्य को प्रभावित कर सकते हैं।

संज्ञानात्मक कार्य को प्रभावित करने वाला एक और कारक पाप, अनैतिकता और बुराई है, जो सभी प्रकार के मुद्दों, विशेष रूप से नैतिक और आध्यात्मिक मुद्दों के बारे में हमारे सोचने के तरीके को भ्रष्ट कर सकता है। इसलिए, पाप हमें संज्ञानात्मक रूप से भ्रष्ट करता है। यह हमारे संज्ञानात्मक कार्य को प्रभावित करता है।

यह जॉन कैल्विन के नाम को नुकसान पहुंचाता है, और एल्विन प्लांटिंगा भी इसी शब्द का प्रयोग करते हैं, सेंसस डिविनिटैटिस, जो ईश्वर के प्रति एक स्वाभाविक, दिव्य रूप से संपन्न, सहज जागरूकता है। पाप हमारी उस क्षमता को नुकसान पहुंचाता है या समझौता करता है जो वास्तव में ईश्वर के स्पष्ट प्रमाण को समझने की है, जैसा कि प्रेरित पौलुस कहते हैं। ईश्वर के अदृश्य गुण, उसकी शाश्वत शक्ति और उसकी दिव्य प्रकृति इस बात से स्पष्ट है कि उसे इस तरह बनाया गया है कि किसी के पास कोई बहाना न हो।

लेकिन जब हम खुद को कुछ पापों के लिए समर्पित कर देते हैं, तो मैं कहूंगा कि खास तौर पर घमंड, घोर घमंड के पाप के लिए। मुझे लगता है कि यह एक ऐसा पाप है जिससे हम सभी जूझते हैं, और कट्टर नास्तिकों, कट्टर नास्तिकों के मामले में, उस मामले में घमंड के प्रलोभनों के आगे झुकना एक तरह की बात है। और फिर अन्य चीजें भी, व्यक्ति पर निर्भर करते हुए, वे किस तरह के पापों के लिए खुद को समर्पित कर सकते हैं जो ईश्वर में विश्वास के मामले में उस तरह का संज्ञानात्मक अवरोध पैदा कर सकता है।

इसलिए, पाप के संज्ञानात्मक परिणाम होते हैं, जैसा कि प्लांटिंगा ने मेरी किताब में लिखा है। मैं इस पर विस्तार से चर्चा करता हूँ। हालाँकि, यहाँ एक सकारात्मक पक्ष भी है, जो विश्वास निर्माण और संज्ञानात्मक कार्य पर व्यवहार और जीवनशैली के प्रभाव के संदर्भ में है, और वह यह है कि आज्ञाकारिता संज्ञान को बढ़ाती है और इसलिए, हमारी नैतिक-आध्यात्मिक जागरूकता को बढ़ाती है।

और नीतिवचन और ज्ञान साहित्य में कई अंशों में इसका संकेत मिलता है, आप जानते हैं, कि परमेश्वर उन लोगों को बुद्धि, समझ और अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जो विनम्र हैं और स्वेच्छा से खुद को प्रभु के अधीन करते हैं। एक व्यक्ति जिसके पास अपेक्षाकृत कम शिक्षा है, वह वास्तव में बहुत बुद्धिमान बन सकता है क्योंकि वह खुद को परमेश्वर के अधीन करता है और उसके वचन का पालन करता है। जॉन की पुस्तक के अध्याय 7 में, मुझे लगता है कि हमें इस विचार की पुष्टि भी मिलती है।

फिर से, यह यीशु बोल रहा है। वह कहता है कि यदि कोई परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहता है, तो वह पता लगाएगा कि मेरी शिक्षा परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से बोलता हूँ, जो यहाँ एक दिलचस्प तरह का वादा है क्योंकि यह हमारे सामान्य रूप से सोचने के तरीके को उलट देता है, जहाँ मैं जाँच करने जा रहा हूँ, है न? मैं इसकी जाँच करने जा रहा हूँ, विशेष रूप से हममें से जो शिक्षाविद हैं। आप जानते हैं, आप एक तरह का कठोर विश्लेषण करने जा रहे हैं, और फिर एक बार जब मैं सुनिश्चित हो जाऊँगा कि यह सच है, तो मैं उसी के अनुसार जीवन जीऊँगा। खैर, यीशु कह रहे हैं, मुझ पर भरोसा करो, परमेश्वर की इच्छा पूरी करो, और फिर तुम्हें एक तरह की अधिक अंतर्दृष्टि और ज्ञान प्राप्त होगा, इस मामले में, उसकी अपनी पहचान के बारे में और क्या वह परमेश्वर के लिए बोलता है।

अपनी पुस्तक में, मैं मनोविज्ञान सहित अन्य क्षेत्रों से कई विचारों पर चर्चा करता हूँ, जो इस थीसिस की पुष्टि करते हैं कि व्यक्तिगत दुर्गुण हमारे उचित कार्य और ईश्वर के बारे में हमारी सोच

को प्रभावित करते हैं, लेकिन अधिक सामान्य रूप से, व्यवहार का विश्वास पर प्रभाव पड़ता है। पॉल विट्स, जो एक पूर्व नास्तिक हैं, जो कई दशकों के बाद ईश्वर में विश्वास करने लगे, ने *द फेथ ऑफ़ द फादरलेस नामक एक पुस्तक लिखी*। उस पुस्तक में, उन्होंने वास्तव में कुछ प्रभावशाली नास्तिक विद्वानों, लुडविग फायरबाक और सिगमंड फ्रायड के नेतृत्व का अनुसरण किया, जिन्होंने धार्मिक विश्वास को मनोवैज्ञानिक रूप से समझाने का प्रयास किया। अपनी पुस्तक *द फेथ ऑफ़ द फादरलेस* में विट्स ने नास्तिकता की एक तरह की मनोवैज्ञानिक व्याख्या की है।

वह इस बात का मनोवैज्ञानिक कारण बताते हैं कि कुछ लोग नास्तिक क्यों बन जाते हैं, जिसे सांख्यिकीय दृष्टिकोण से देखें तो आप जो भी कहें, लेकिन वे कहीं भी हो सकते हैं, आप जानते हैं, शायद पाँच से आठ प्रतिशत आबादी नास्तिक है, यह आपके द्वारा पढ़े गए सर्वेक्षणों पर निर्भर करता है। तो यह आबादी का एक छोटा प्रतिशत है जो नास्तिक है। और मानवता का बड़ा हिस्सा हमेशा से, आप जानते हैं, किसी न किसी तरह की उच्च शक्ति में विश्वास करता रहा है।

तो यहाँ नास्तिक हैं जो 90 प्रतिशत लोगों की ईश्वर के बारे में धारणाओं को गलत साबित करने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि वे किसी तरह से संज्ञानात्मक रूप से विफल हो रहे हैं। मेरा मतलब है, हम दर्शनशास्त्र में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे के बारे में बात कर रहे हैं। क्या ईश्वर है? और 90 प्रतिशत से अधिक लोगों का इस बारे में मूल रूप से भ्रमित होना, मानवीय स्थिति का एक बहुत ही परेशान करने वाला और अंधकारमय दृष्टिकोण है।

जबकि, सांख्यिकीय दृष्टिकोण से, यदि आप सोचते हैं कि मनुष्य, आप जानते हैं, कम से कम वास्तविकता की प्रकृति के साथ शालीनता से समायोजित हैं, तो संभवतः अधिकांश, यह अधिक संभावना है कि अधिकांश लोग ईश्वर के प्रश्न पर लगभग सही हैं। आप जानते हैं, मानवता का केवल 10 प्रतिशत से भी कम हिस्सा ही ऐसा है जो इस बारे में इतना बुनियादी रूप से गलत है। कम से कम, यह एक कम निराशावादी दृष्टिकोण है।

यदि यह केवल आबादी का एक छोटा सा अल्पसंख्यक है जो इस प्रश्न पर इतना गुमराह है। लेकिन पॉल विट्स एक तरह का मनोवैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत करते हैं कि यह कैसे होता है, आप जानते हैं, आबादी का पाँच से 10 प्रतिशत हिस्सा नास्तिक बन जाता है। यह उनके दोषपूर्ण पिता की परिकल्पना है कि नास्तिकता किसी के पिता के साथ टूटे हुए रिश्ते के कारण होती है।

वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है, या कम से कम वह आधुनिक काल से लेकर 20वीं सदी तक के सभी प्रमुख नास्तिकों के ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार पर इस परिकल्पना को विकसित करता है। और उनमें से हर एक, आप जानते हैं, डेविड ह्यूम से लेकर फ्रायड, बर्ट्रैंड रसेल, डेवी, नीत्शे, उनमें से हर एक, मार्क्स, का अपने पिता के साथ बहुत खराब रिश्ता था, या तो पिता की मृत्यु हो गई, पिता ने परिवार छोड़ दिया, या वह बहुत ही अपमानजनक था। तो, वहाँ एक सुसंगत विषय है, जो बहुत ही विचारोत्तेजक है।

इस बीच, वह उस अवधि के प्रमुख आस्तिक और प्रभावशाली आस्तिक विचारकों को देखता है, और उन सभी का अपने पिता के साथ अच्छा रिश्ता नहीं था; उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण पिता

था जो उन पर एक तरह से सकारात्मक प्रभाव डालता था। अब, मैं यह जोड़ना चाहता हूँ कि बहुत से लोग हैं जो कट्टर आस्तिक और ईसाई हैं, जिनके पिता के साथ रिश्ते बहुत खराब रहे हैं। और यह विट्स की थीसिस के अनुरूप है।

वह यह नहीं कह रहे हैं कि नास्तिकता के लिए यह पर्याप्त शर्त है। शायद यह एक आवश्यक शर्त है। इसलिए बहुत से लोग, चाहे वे धार्मिक हों, ईसाई हों या अन्य, पिता के साथ उनके रिश्ते टूट चुके हैं, और उन्होंने उस तरह से प्रतिक्रिया नहीं की है जिस तरह से कट्टर नास्तिक करते हैं।

तो, यह अभी भी एक व्यक्ति का चुनाव है, चाहे वह नास्तिकता की ओर झुकाव बनाए रखे या कट्टर, मैं कहूंगा, उस ईश्वर के प्रति कट्टर, जिसे वह अपने दिल के अंदर जानता है। और आप कह सकते हैं, ईश्वर को चुपचाप छोड़ दें। कुछ लोगों ने इसे उन शब्दों में प्रस्तुत किया है और कहा है कि हर कोई अपने दिल के अंदर जानता है कि ईश्वर है।

बहुत से पूर्व नास्तिक ऐसा कहते हैं। मैं भी ऐसा ही कहूंगा। मैं कुछ समय के लिए अज्ञेयवादी था।

लेकिन मैं जानता था, जब मैं खुद को अज्ञेयवादी कहता था, तब भी मैं हमेशा से जानता था कि ईश्वर है, और मैं उस ईश्वर और मेरे जीवन पर उसके आह्वान का विरोध कर रहा था। पॉल जॉनसन की पुस्तक, *इंटेलेक्चुअल्स, कई अग्रणी आधुनिक बुद्धिजीवियों की एक आकर्षक परीक्षा* है जो वास्तव में अपने विद्वानों की जांच और सिद्धांतों का उपयोग अपने स्वयं के व्यक्तिगत दुराचार को तर्कसंगत बनाने या उचित ठहराने या कम करने के लिए करते हैं। ई. माइकल जोन्स की पुस्तक *डिजेनरेट मॉडर्न्स*, एक तरह से यही बात एक आकर्षक और परेशान करने वाले तरीके से करती है।

वह विशेष रूप से माग्रेट मीड और अल्फ्रेड किन्से जैसे विद्वानों, ब्लूम्सबरी समूह के कुछ सदस्यों को देखता है, जो अपने सिद्धांतों को विकसित करते हैं, फिर से, कई मायनों में अपनी खुद की जीवन शैली के तर्कसंगतकरण के रूप में, जो ईसाई धर्म के अलावा कुछ भी नहीं थे। मैं विलियम जेम्स की *विल टू बिलीव के बारे में बात करता हूँ*, जिसके बारे में मैं किताब में भी बात करता हूँ, जिसके बारे में हम पहले ही दूसरे व्याख्यान में बात कर चुके हैं, और कैसे इच्छाशक्ति अक्सर विश्वास निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने पुष्टि की है कि जब किसी विश्वास और किसी के व्यवहार के बीच संघर्ष होता है, तो सबसे अधिक संभावना है कि व्यवहार के अनुरूप विश्वास ही रास्ता दे।

हम शायद भोलेपन से सोचते हैं कि, जब वहाँ एक तरह की संज्ञानात्मक असंगति होती है, तो व्यक्ति अपने व्यवहार को अपनी मान्यताओं के अनुरूप बदल देगा। खैर, कई संदर्भों में, यह निश्चित रूप से मामला है। लेकिन नैतिक संदर्भों में, विशेष रूप से जब यहाँ कोई जीवनशैली विकल्प होता है जो किसी व्यक्ति की कुछ मान्यताओं के विपरीत होता है, तो अपने विश्वासों को बदलना या यह कहना कि, मैंने इस पर थोड़ा और गौर किया है, और इस पर मेरा विचार बदल गया है, बहुत आसान है।

मुझे नहीं लगता कि यह सब गलत है। इसलिए मैं अभी भी यौन रूप से अनैतिक जीवन जी रहा हूँ। मुझे नहीं लगता कि यह वास्तव में गलत है जब तक कि मैं इन लोगों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार कर रहा हूँ।

अपने व्यवहार की तुलना में अपने विश्वासों को बदलना बहुत आसान है। थॉमस कुह्न का विज्ञान दर्शन भी यहाँ प्रासंगिक है। कुह्न ने कहा कि एक व्यक्ति की सैद्धांतिक प्रतिबद्धताएँ, सैद्धांतिक प्रतिमान जिसे वे विज्ञान और वैज्ञानिक जांच के संदर्भ में मानते हैं, इस बात पर प्रभाव डालते हैं कि वे डेटा की व्याख्या कैसे करते हैं और डेटा के बारे में जो निष्कर्ष निकालते हैं, उसमें वे उसका विश्लेषण कैसे करते हैं।

किसी व्यक्ति की स्थायी विश्वास प्रतिबद्धताएं और सैद्धांतिक पुष्टि इस बात को प्रभावित करती हैं कि वे डेटा की व्याख्या कैसे करते हैं। तो, यह सब कुह्न द्वारा वैज्ञानिक अवलोकन की सिद्धांत-भारितता का एक हिस्सा है। खैर, यह केवल विज्ञान के संदर्भ में ही नहीं बल्कि कई अन्य जीवन संदर्भों में भी सच है।

जब हमारे पास सैद्धांतिक प्रतिबद्धता होती है, तो हम दुनिया को उसी नज़रिए से देखते हैं। उदाहरण के लिए भू-केन्द्रवाद और सूर्य-केन्द्रवाद को लें। भू-केन्द्रवाद का मानना है कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है।

भू-केन्द्रवाद के अनुसार ऐसा ही लगता है क्योंकि भू-केन्द्रवाद के रूप में उनके पास यही विश्वास प्रणाली है। इस बीच, सूर्यकेन्द्रवाद बाहर जाता है और वही चीज़ देखता है, सूर्य पूरे दिन, हर दिन पूर्व से पश्चिम की ओर जा रहा है, और वे कहेंगे, ठीक है, मैं अप्रत्यक्ष रूप से पृथ्वी के घूमने का निरीक्षण कर रहा हूँ जो पृथ्वी के चारों ओर यात्रा करने वाले सूर्य की यह धारणा बनाता है।

तो, भू-केन्द्रवादी और सूर्यकेन्द्रवादी, आप कह सकते हैं, एक ही चीज़ का निरीक्षण कर रहे हैं, लेकिन प्रत्येक इसे एक सैद्धांतिक ढांचे के माध्यम से देख रहा है जो मौलिक स्तर पर प्रभावित करता है कि वे डेटा की व्याख्या कैसे कर रहे हैं। खैर, यह एक तरह का बुनियादी उदाहरण है कि इतने सारे अन्य संदर्भों में क्या होता है जब हम अपने पास मौजूद सैद्धांतिक लेंस के माध्यम से मानव अनुभव के डेटा की व्याख्या करते हैं। यदि आपके पास एक नास्तिक ढांचा है, और आप उसमें फंस जाते हैं, तो यहां तक कि जो ईश्वर के लिए स्पष्ट प्रमाण होना चाहिए, आप जानते हैं, उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

उनकी व्याख्या स्वाभाविक रूप से की जाती है ताकि हमें वह परिणाम मिले जिसके बारे में प्रेरित पौलुस ने रोमियों 1 में बात की है, सत्य का दमन और ईश्वर के बारे में इस अज्ञानता को बनाए रखना, हालाँकि वह प्रकृति में खुद को सभी तरह के ज्वलंत तरीकों से प्रदर्शित कर रहा है, जैसे कि हमारे आस-पास दिखने वाले पौधे और जानवर, ब्रह्मांड का तथ्य, ये सभी अलग-अलग आकाशगंगाएँ, और ब्रह्मांड का बारीक तालमेल, और ये सभी चीज़ें जिनके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं। वे कोई प्रभाव नहीं डालते हैं क्योंकि मैं इसे प्रतिमान-प्रेरित अंधापन कहता हूँ। मैं आत्म-धोखे के बारे में भी बात करता हूँ, जब किसी चीज़ पर विश्वास करने के लिए प्रेरित पूर्वाग्रह होता है जो कि गलत है, यहाँ तक कि जब स्पष्ट सबूत होते हैं जो किसी व्यक्ति की

मान्यताओं का खंडन करते हैं, तब भी वे उस विश्वास में बने रह सकते हैं, जैसे कि एजे आयर के मामले में, जिन्हें मृत्यु के निकट का अनुभव हुआ था।

मुझे लगता है कि वह कुछ सामन मछली खा रहा था और वह उसकी सांस की नली में फंस गई। वह बेहोश हो गया और आखिरकार उसे होश में लाया गया और उसने बताया कि उसे कुछ ऐसी चीजें महसूस हुईं जो अलौकिक थीं। बाद में उसने अपने पारिवारिक चिकित्सक से निराशा के साथ कहा कि अब मुझे अपनी सारी किताबें बदलनी पड़ेंगी क्योंकि वह इन सभी दशकों में तार्किक प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण से लिखता रहा है।

जाहिर है, उन्होंने ऐसा नहीं करने का फैसला किया क्योंकि उन्होंने कभी भी अपने बयान से पीछे नहीं हटे। एंथनी फ्लेव के विपरीत, एजे आयर ने कभी भी सार्वजनिक रूप से अलौकिक में अपने विश्वास को स्वीकार नहीं किया, इसलिए उनके पास एक प्रेरित पूर्वाग्रह था क्योंकि वह एक निश्चित, मुझे लगता है, विद्वान अखंडता बनाए रखना चाहते थे, कम से कम सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आना चाहते थे, क्योंकि मैं नहीं जानता कि वह कभी आस्तिक बने या नहीं, लेकिन उन्होंने एक छोटा सा निबंध लिखा था, मैं उनके लिए यह कह सकता हूँ, जिसका नाम है, मैंने जब मरकर देखा, जहाँ उन्होंने इसकी रिपोर्ट की है, लेकिन उनके पारिवारिक चिकित्सक के साथ हुई बातचीत के संबंध में सामने आई अन्य रिपोर्टों के आधार पर, यह वास्तव में अलौकिक में विश्वास के लिए इसके महत्व को पहचानने के संबंध में कहीं अधिक प्रभावशाली था, जितना उन्होंने कभी सार्वजनिक रूप से बताया। वैसे भी, यह निश्चित रूप से बहुत से विद्वानों के लिए एक प्रेरित पूर्वाग्रह होगा जो नास्तिक या धार्मिक संशयवादी हैं, साथ ही साधारण लोग जो तार्किक से अधिक व्यक्तिगत कारणों से अपने नास्तिक दृष्टिकोण पर कायम रहते हैं।

और फिर अंत में, अपनी पुस्तक में, मैं ईश्वरवाद के आशीर्वाद के बारे में बात करता हूँ और कैसे ईश्वरवादी विश्वास सद्गुणों के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। यह हमारे संज्ञानात्मक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। आप ईश्वर की वास्तविकता के प्रति जितने अधिक सजग होंगे, आप उतने ही अधिक आज्ञाकारी होंगे, और आप जितने अधिक आज्ञाकारी होंगे, आप ईश्वर की वास्तविकता के प्रति उतने ही अधिक सजग होंगे।

यह एक तरह का पुण्य चक्र है। इसलिए, हमारी आज्ञाकारिता और ईमानदारी से जीने से हमारी संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली में सुधार होता है। और फिर आस्तिकता का एक और लाभ यह है कि यह हमें शिकायत करने का अधिकार देता है, साथ ही धन्यवाद देने का विशेषाधिकार भी देता है, जो दोनों ही मनोवैज्ञानिक रूप से लाभकारी हैं।

किसी से शिकायत करना, जैसा कि भजनकार बार-बार करते हैं। बाइबल के बहुत से लेखक और पात्र परमेश्वर से बहुत सी चीजों के बारे में शिकायत करते हैं, और ऐसा करना सही और अच्छा काम है। इसलिए, मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि मैं आदरपूर्वक और ईमानदारी से परमेश्वर से शिकायत करता हूँ: आपने हमें इस अन्याय और पीड़ा के अधीन क्यों किया है, और हे प्रभु, आप हमें कब तक बचाएंगे?

यह एक तरह की रेचक चीज़ है, और यह मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत फ़ायदेमंद है, जैसे कि ब्रह्मांड और इसकी सभी सुंदरता के लिए जिम्मेदार किसी व्यक्ति को धन्यवाद देने की क्षमता, कला से लेकर तकनीक तक और सिर्फ़ पौधे और जानवर और प्रकृति की सुंदरता तक हमारे पास मौजूद सभी आशीर्वाद। इन सभी चीज़ों के लिए हमें किसी को धन्यवाद देना चाहिए। मुझे पता है कि एक नास्तिक कहेगा, ठीक है, हम उन लोगों को धन्यवाद दे सकते हैं जिन्होंने एयर कंडीशनिंग और टोस्टर ओवन का आविष्कार किया।

यह कृतज्ञता या धन्यवाद की वह गहराई नहीं है जिसका अवसर आस्तिक के पास ईश्वर को धन्यवाद देने के संदर्भ में है, जिसने मनुष्य को इस प्रकार की तकनीकों के साथ आने के लिए तर्कसंगत क्षमताएँ प्रदान की हैं। लेकिन निश्चित रूप से, जब प्रकृति की बात आती है, और वह सुंदरता जो हम अपने चारों ओर देखते हैं, या वे चीज़ें जो हम मानव शरीर के बारे में खोजते हैं और यह कितना उल्लेखनीय रूप से डिज़ाइन किया गया है, तो हम आस्तिक लोगों के पास धन्यवाद देने के लिए कोई है: हमारे निर्माता जिन्होंने हमें इस तरह बनाया और हमें ये क्षमताएँ दीं। यदि आप मानते हैं कि हम प्राकृतिक चयन और आनुवंशिक उत्परिवर्तन के युगों का परिणाम हैं, और एक प्राकृतिक ब्रह्मांड में यही है, तो वास्तव में आपके पास हमारे उल्लेखनीय मानव शरीर के साथ-साथ सृष्टि में सभी सुंदर प्राणियों, वनस्पतियों और जीवों के लिए धन्यवाद देने वाला कोई नहीं है।

तो ये हैं आस्तिकता के कुछ लाभ, और इसी तरह मैं अपनी किताब का समापन करता हूँ। तो ये हैं नए नास्तिकता पर मेरे विचार।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 7 है, नया नास्तिकवाद।